



जिलेट मरीज़

(उनकी नज़र से जो इंतज़ार करते हैं)

“क्लिनिक मरीज़ों का इलाज करता है। देखभाल करने वाला समुदाय लोगों को सहारा देता है।”

I. मरीज़

जब कोई मरीज़ पहली बार किसी पुनर्वास केंद्र में दाखिल होता है, तो वह घड़ी शायद ही कभी उसने खुद चुनी होती है। अक्सर वह किसी ऐसे के साथ आता है जिसने सबसे कठिन फैसला किया है: यह मानते रहना कि कोई रास्ता अब भी बाक़ी है।

जो उसके साथ जीता है, वह अपने भीतर हमेशा वही एक सवाल लिए चलता है। यह इम्तिहान कब ख़त्म होगा? और ठीक उसके बाद एक और सवाल आता है, ज़िद्दी और ख़ामोश:

वही क्यों? हम ही क्यों?

पर इन जगहों में मरीज़ सिर्फ़ वे नहीं होते जिनके नाम कोई डायग्नोसिस दर्ज है। वह तो चिकित्सा की, वर्गीकरणों की, प्रोटोकॉल की चीज़ है।

हकीकत कुछ और है।

मरीज़ वे भी हैं जो इंतज़ार करते हैं, जो साथ चलते हैं, जो सँभाले रखते हैं। मरीज़ वे हैं जो हर दिन तकलीफ़ के बगल में जीते हैं, और ऐसे डर, त्याग, उम्मीदें और थकानें बाँटते हैं जिन्हें कोई मेडिकल रिकॉर्ड कभी दर्ज नहीं करेगा।

पुनर्वास केंद्र में दाखिल होते ही आप दूसरे लोगों से मिलते हैं, दूसरी कहानियों से, अधर में लटकी दूसरी किस्मतों से। और जहाँ इलाज करा रहा इंसान अक्सर अपनी रोज़ की लड़ाई में डूबा रहता है, वहीं साथ आने वाला देखता है, तुलना करता है, सोचता है।

वह ज़्यादा कठिन मामले देखता है, ज़्यादा गंभीर हालतें, ज़्यादा लंबे रास्ते।

और, लगभग अपराध-बोध के साथ, सोचता है:

“सब कुछ देखते हुए, इससे बुरा भी हो सकता था।”

पर आने वाला हर इंसान एक अलग कहानी लाता है, और भीतर, बहुत गहरे, वही सवाल सँजोए रखता है, अनिश्चितता में झलकता और उसी से ढला हुआ:

कल क्या मुमकिन होगा?

इंतज़ार और ठहरने के पलों में बातचीत का मिज़ाज बदल जाता है। लोग बीमारी की बात लगातार कम करते जाते हैं, और ज़िंदगी की लगातार ज़्यादा।

वे बताते हैं कि पहले वे कौन थे।

वे याद करते हैं कि यह सब कैसे शुरू हुआ।

वे उन छोटी-छोटी जीतों को बाँटते हैं जो दूसरों को मामूली लग सकती हैं पर किसी के लिए एक बहुत बड़ा मुक़ाम होती हैं।

वे उस प्रगति की बात करते हैं जो दिखती नहीं, उन मायूसियों की जो लगन के साथ-साथ जीती हैं, उस उम्मीद की जो इंतज़ार के भीतर जीती रहती है।

सबसे बढ़कर, वे उनकी बात करते हैं जो पास बने रहते हैं।

इस बात की कि वे लोग कितने त्याग करते हैं जो हर दिन हाथ बढ़ाए रखते हैं।

और अक्सर एक ऐसा ख़याल उभरता है जिसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी:

“मैं जो बन गया हूँ, उसे मैं स्वीकार करता हूँ। मुझे वह भारी नहीं पड़ता। मुझे भारी पड़ता है वह बोझ जो मैं दूसरों से उठवा रहा हूँ।”

यह रोज़ का साहस है।

एक ख़ामोश साहस।

एक ऐसी जगह जहाँ हार मानने की गुंजाइश नहीं, जहाँ हर क़दम इच्छाशक्ति माँगता है, जहाँ उदासी भी छिपा ली जाती है, हमसे प्यार करने वालों को बचाने के लिए।

क्योंकि जो हमारे बगल में खड़े हैं, वे हमें ऐसे ध्यान से देखते हैं जैसा हमने शायद पहले कभी जाना ही नहीं।

हर हरकत पर नज़र जाती है।

हर सुधार का जश्न मनाया जाता है।

हर झटका मिलकर झेला जाता है।

मरीज़ हम हैं।

वे, जो लौटने का रास्ता ढूँढ़ रहे हैं।

कुछ के लिए एक क़दम मामूली बात है।

दूसरों के लिए वह एक जीत है।

और फिर भी उम्मीद वहीं खड़ी रहती है, अड़ियल, तब भी जब सब कुछ उलटा ही इशारा करता लगे।

दूसरों की कहानियाँ देखना हमें उसकी क़ीमत पहचानना सिखाता है जो अब भी हमारे पास है।

और जो सचमुच तकलीफ़ से गुज़रता है, वह एक ऐसी सच्चाई समझ जाता है जो सामान्य जीवन जीने वालों से अक्सर छूट जाती है:

ज़िंदगी को बड़ी चीज़ें नहीं थामे रखतीं।

कभी-कभी थोड़ा-सा काफ़ी होता है।

कभी-कभी लगभग कुछ नहीं भी काफ़ी होता है।

और वही लगभग कुछ नहीं सब कुछ बन सकता है।

II. उपसंहार

मरीज़ एक इंसान है।

तकलीफ़ का समुदाय उससे कहीं ज़्यादा है।

कोई सचमुच यह नहीं कह सकता: मेरे साथ यह कभी नहीं होगा।

बीमारी आमदनी नहीं पहचानती, रुतबा नहीं नापती, सामाजिक भेद नहीं करती। वह इजाज़त माँगे बिना आती है और जिससे मिलती है उसकी, और उसके साथ जीने वालों की, ज़िंदगी बदल देती है।

इसीलिए हमें हर दिन को ज़्यादा कृतज्ञता से देखना सीखना चाहिए।

अक्सर मरीज़ ही जीवन की क़ीमत सबसे गहराई से समझते हैं, क्योंकि उन्होंने उसकी नाज़ुकी को जाना है। वे जानते हैं कि एक सादा-सा इशारा कितना अनमोल हो सकता है, एक बढ़ा हुआ हाथ, एक छोटा-सा सुधार जो दूसरों को मामूली लगता है।

और शायद इसीलिए किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि उसे फ़ैसला सुनाने का हक़ है।

हम कभी नहीं जानते कि हमारे सामने खड़ा इंसान कौन-सी लड़ाई लड़ रहा है।

हम कभी नहीं जानते कि एक बंद दरवाज़े के पीछे, एक चुप्पी के पीछे, एक ऐसी थकान के पीछे क्या छिपा है जो कभी कही नहीं जाती।

तकलीफ़ सिखाती है कि ज़िंदगी सिर्फ़ उससे नहीं बनती जो हमारे पास है, बल्कि उससे भी जिसे हम तब बचा पाते हैं जब हमसे बहुत कुछ छीन लिया जाता है।

और तभी हमें एक सीधी-सी सच्चाई का पता चलता है।

कुछ के लिए एक क़दम मामूली बात है।

दूसरों के लिए वह एक जीत है।

और हर जीत सम्मान की हक़दार है।

III. लेखक-पृष्ठ

यह रचना किसी के कहने पर नहीं लिखी गई।

यह बेची नहीं गई।

यह किसी व्यावसायिक मक़सद से नहीं बनाई गई।

यह पुनर्वास के, मानवीय गरिमा के और लोगों के आपसी रिश्ते के मूल्य की गवाही देने के लिए लिखी गई।

माँगा गया एकमात्र मेहनताना एक प्रतीकात्मक डॉलर है — रचना की कीमत के तौर पर नहीं, बल्कि देखभाल, उम्मीद और ज़िम्मेदारी की संस्कृति के प्रति साझा प्रतिबद्धता के साक्ष्य के तौर पर।

फर्दिनांदो